# || शनि चालीसा ||

## || दोहा ||

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल |
दीनन के दुख दूर करि, कीजै नाथ निहाल ||
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज |
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज ||

## || चौपाई ||

जयति जयति शनिदेव दयाला | करत सदा भक्तन प्रतिपाला ||
चारि भुजा तनु श्याम विराजै | माथे रतन मुकुट छबि छाजै ||
परम विशाल मनोहर भाला | टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला ||
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके | हिय माल मुक्तन मणि दमकै ||
कर में गदा त्रिशूल कुठारा | पल बिच करैं अरिहिं संहारा ||
पिंगल, कृष्णों, छाया, नन्दन | यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख भंजन ||
सौरी, मन्द, शनी, दश नामा | भानु पुत्र पूजहिं सब कामा ||
जा पर प्रभु प्रसन्न ह्वैं जाहीं | रंकहुँ राव करैं क्षण माहीं ||
पर्वतहू तृण होई निहारत | तृणहू को पर्वत करि डारत ||
राज मिलत बन रामहिं दीन्हयो | कैकेइहुँ की मति हरि लीन्हयो ||

बनहूँ में मृग कपट दिखाई | मातु जानकी गई चुराई ||
लखनहिं शक्ति विकल करिडारा | मचिगा दल में हाहाकारा ||
रावण की गति मति बौराई | रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई ||
दियो कीट करि कंचन लंका | बजि बजरंग  बीर की डंका ||
नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा | चित्र मयूर निगलि गै हारा ||
हार नौलखा लाग्यो चोरी | हाथ पैर डरवायो तोरी ||
भारी दशा निकृष्ट दिखायो | तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो ||
विनय राग दीपक महं कीन्हयों | तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हयों ||
हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी | आपहुं भरे डोम घर पानी ||
तैसे नल पर दशा सिरानी | भूंजी-मीन कूद गई पानी ||

श्री शंकरहिं गह्यो जब जाई | पार्वती को सती कराई ||
तनिक विलोकत ही करि रीसा | नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा ||
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी | बची द्रौपदी होति उघारी ||
कौरव के भी गति मति मारयो | युद्ध महाभारत करि डारयो ||
रवि कहँ मुख महँ धरि तत्काला | लेकर कूदि परयो पाताला ||
शेष देवलखि विनती लाई | रवि को मुख ते दियो छुड़ाई ||
वाहन प्रभु के सात सजाना | जग दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना ||
जम्बुक सिंह आदि नख धारी | सो फल ज्योतिष कहत पुकारी ||
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं | हय ते सुख सम्पति उपजावैं ||
गर्दभ हानि करै बहु काजा | सिंह सिद्धकर राज समाजा ||

जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै | मृग दे कष्ट प्राण संहारै ||
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी | चोरी आदि होय डर भारी ||
तैसहि चारि चरण यह नामा | स्वर्ण लौह चाँदी अरु तामा ||
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं | धन जन सम्पत्ति नष्ट करावैं ||
समता ताम्र रजत शुभकारी | स्वर्ण सर्वसुख मंगल भारी ||
जो यह शनि चरित्र नित गावै | कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै ||
अद्भुत नाथ दिखावैं लीला | करैं शत्रु के नशि बलि ढीला ||
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई | विधिवत शनि ग्रह शांति कराई ||
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत | दीप दान दै बहु सुख पावत ||
कहत राम सुन्दर प्रभु दासा | शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा ||

**|| दोहा ||**

पाठ शनिश्चर देव को, की हों विमल तैयार |
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार ||

|| **शनि बीज मंत्र** ||

ऊं प्राँ प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः |

|| **शनि एकाक्षरी मंत्र** ||

ऊँ शं शनैश्चाराय नमः |

|| **शनि मूल मंत्र** ||

नीलांजन समाभासं रवि पुत्रां यमाग्रजं | छाया मार्तण्डसंभूतं तं नामामि शनैश्चरम् ||

|| **शनि गायत्री मंत्र** ||

औम कृष्णांगाय विद्यमहे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात |

www.hanumanchalisalyric.com